टप्पा एक उपशास्त्रीय गायन शैली

डॉ0 अंजना रानी, एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत
गायन, राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

शास्त्रीय संगीत में गायन विस्तार और प्रचार की दृष्टि से टप्पा, अन्य विधाओं , ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी की अपेक्षा संक्षिप्त और अल्प प्रचलित विद्या है। यह शैली मूलत: प्राचीन अर्थात वर्तमान पाकिस्तान के झंग सियाल प्रान्त के लोकगीतों से प्रभावित है। वहां के लोकगीतों और टप्पा गायन की हरकतों में बहुत समानता है। उसका एक उदाहरण इस प्रान्त के लोकगीत 'हीर" का गायन है।" हीर" गायन में गले की जो हरकते' ली जाती हैं, उसी तरह की हरकतों का प्रयोग, टप्पा गायन शैली में भी होता है।

एक उपशास्त्रीय गायन शैली के रूप में प्रचलित टप्पा गायन शैली को हिन्दी भाषी प्रांतों में टप्पा, बांगला में टॉप्पा तथा पंजाबी में टप्पे के नाम से जाना जाता है। टप्पा शब्द, पंजाबी, भाषा के "टम्पना" शब्द से नीमित हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है----उछ्लना, कूदना व फुदकना। इसके अर्थ के संबंध में कोई मतभेद नहीं हो सकते क्योंकि यह तो सर्वविदित है कि टप्पा गायन शैली की चाल कूद-कूद कर चलने के समान ही होती है। जिनकी तुलना ऊंट पर सवार होकर गाए जाने वाले लोकगीतों से की जा सकती है।

ऐसा माना जाता है कि लखनऊ के नवाब आसफउद्दौला के दरबार में एक पंजाबी संगीतकार रहते थे। जिनका नाम गुलाम नबी उर्फ शोरी मियां था उन्होने टप्पा गापकी का अविष्कार किया। कुछ विद्वानों का कथन है कि प्राचीन बेसरा नामक गीति के पर टप्पा गायन की उत्पत्ति हुई। डा० पन्ना लाल मदन, अपनी पुस्तक 'संगीताध्यापन' में लिखते हैं कि ध्रुपद, धमार,

और ठुमरी की भांति टप्पा गापकी भी प्राचीन शैली बेसरा अर्थात् वेगस्वरा गीति का आधुनिक रूप है। वेगस्वरा और टप्पा मे नामांतर और भाषांतर तो अवश्यक हुआ है परंतु रूपांतर बिल्कुल नहीं हुआ है जैसे प्राचीन बेसरा गीति में स्वर, लय, तथा शब्द का वेग तीव्र होता था, उसी प्रकार टप्पा गायन में भी स्वर लय तथा शब्द को कहीं विश्राम नहीं मिलता

वास्तव में टप्पा गायन शैली का जन्म ही मियां शोरी के लचीले, महीन, सुरीले कंठ से तथा नवीनता की तलाश और तान प्रियता के कारण हुआ। अपने फक्कड़ स्वाभाव के कारण, पंजाब प्रांत में घुमते समय, शोरी मिया ने ऊंट पर सवार होकर जाने वाले कुछ व्यापारियों को हीर रांझा के गीत गाते हुए सुना। उन पंजाबी गीतों में छोटी- 2 वक्र मुर्कीदार आकर्षक तानें और ऊंट की कारण गानें के बीच में हिचकोले खाती स्वरावली, इनके मस्तिष्क में कुछ ऐसी बैठ गई कि इन्होने इन सभी विशेषताओं का मिश्रण करके एक ऐसी गायन शैली का निर्माण किया जो शास्त्रीयता के रंग में रंगी हुई थी परंतु बाद में जिसे उपशास्त्रीयता गायन विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इस प्रकार पंजाबी गीतों की सहायता से शास्त्रीय संगीत की टप्पा नामक गायन विद्या ने जन्म लिया।

कैप्टन विलर्ड अपनी पुस्तक " ट्रीटाईम ऑफ इंडियन म्यूजिक ऑफ हिन्दुस्तान" में लिखते है कि पंजाब में ऊंट हांकने वाले लोग टप्पा के रूप में जिन लोकगीतों को गाते थे, वह इस उपशास्त्रीय टप्पा गापन शैली से भिन्न है। टप्पा गाने का ढंग ख्याल से बिल्कुल निराला है। इसकी गति अत्यंत चपल होती है। इसकी तानें दानेदार व बहुत तैयार लय में गाई जाती है। टप्पे की तानें छोटे- छोटे टुकड़ों से बनी होती हैं। इसमे मुर्की, जमजमा, आंस इत्यादि का भी प्रयोग होता है। कुछ लोग इसे क्षुद्र प्रकृति का गायन मानते हैं किन्तु ऐसा सोचना गलत है क्योंकि हर एक गायन

शैली अपने - 2 स्थान पर ठीक है। वास्तव में हर एक गायक के लिए टप्पा गाना आसान नहीं है इसके लिए विशेष रीति से गला तैयार करना पड़ता है।

टप्पा अधिकतर काफी, झिंझोटी, भैरवी, इत्यादि रागो मे गाया जाता है। इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता होती है और इसमें पंजाबी भाषा के शब्द अधिकतर पाए जाते है। पंजाबी, मुल्ता भाषा के अतिरिक्त उर्दू, फारसी, खडी बोली व कुछ अन्य भाषाओ मे भी पाए जाते हैं। बंगाल मे विधु बाबू ने टप्पों के रचना बंगाली भाषा में की।

टप्पा गायन शैली पर पंजाबी लोक धुनों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। यह चंचल प्रकृति की गापन शैली है इसमें प्रत्येक शब्द के साथ छोटी - 2 तानें व मुर्कियां ली जाती हैं परंतु इसमें ठुमरी की तरह अभिनय अंग नहीं होता ! ठुमरी मे ताने छोटे-2 मोतियों की माला के समान गुंथी हुई होती है परंतु टप्पे की ताने बिखरी हुई होती हैं, इसे दूत ख्याल और ठुमरी का मिला जुला रूप भी कहा जा सकता है। यद्यपि यह शैली शास्त्र के कठोर नियमों बंधनों से युक्त है परन्तु फिर भी यह सरल नहीं है और न ही प्रत्येक गायक कलाकार इस पर सरलता से अधिकार कर पाता है। इसके गायन के लिए गले को विशेषकर इस शैली का अभ्यास करके ही इसके योग्य बनाया जा सकता है। इसमें रस व भावों की ओर इतना ध्यान नहीं दिया जाता, जितना चमत्कार की, ओर दिया जाता है।

टप्पा गायन में तान का प्रयोग बहुत अधिक होता है। बंदिश भी तानों से युक्त होती है। तानें दानेदार तथा खटको 'व मुर्कियों से युक्त होती हैं। मुर्कियां टप्पे की मुख्य विशेषता है। प्रत्येक प्रकार के जलद गमकों का प्रयोग इसमें किया जा सकता है परंतु गंभीर व भारी गमक के लिए इसमें कोई स्थान नहीं है। टप्पे में प्रयुक्त सीधी या वक्र, दोनो प्रकार की तानों में आरोह-अवरोह करते समय बीच-2 में दो-2 स्वरों के जोड़ दिखाते हुए जाते है। जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे किसी सीढ़ी पर चढ़ते समय, हर बार एक दो सीढ़ी उत्तर कर फिर चढ़ना आरंभ कर दिया जाए जैसे – ग म प ध ध प म ग रे ग, ग म प प म ग रे सा आदि। इस प्रकार बिना क्रम तोड़े, ताने पूरी कर ली जाती हैं। अत: किसी अन्य शैली में इस प्रकार से ताने लेना आवश्यक नही हूँ परंतु टुप्पा पूर्णतः इसी प्रकार की तानों पर आधारित होता है। टप्पे में मींड का प्रयोग बहुत कम होता है जो कि ठुमरी व ख्याल में प्रयाप्त रूप में होता है ।

विषय वस्तु

टप्पा गायन की विषय वस्तु, हीर व रांझा की गाथाओं से तथा प्रेम भाव के विभिन्न श्रृंगारिक रूपों से युक्त होती हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकार बैनर्जी इस संबंध मे लिखते हैं- हमारे यहां यह धारणा है कि टप्पो सदैव श्रृंगार रस मे ही होने चाहिए परंतु ऐसी कोई बात नहीं है। टप्पो की रचना किसी भी रस मे की जा सकती है। परंतु इस गायन शैली की प्रवृति अत्यधिक चपल तथा चाल तीव्र होने के कारण ईश्वर भक्ति से परिपूर्ण रचना इसमें शोभित नहीं होती, टप्पों की प्रकृति की ओर देखने से यही ज्ञात होता है कि टप्पे मुख्यता हास्य, आनन्द, श्रृंगार आदि लघुभावोपयोगी होते हैं।

तालें व राग

टप्पा गायकी के लिए टप्पा ताल का प्राय: प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त तीनताल, झूमरा, दीपचंदी ताल का प्रयोग भी इसमें किया जाता है। यह मध्य लय में गाई जाती है। टप्पे के साथ पंजाबी ताल का अथवा टप्पे की ताल अद्धा त्रिताल बिजाई जाती है। कभी-2 विलंबित त्रिताल का प्रयोग भी किया जाता है। (राग विज्ञान के प्रथम भाग मे खमाज राग में टप्पे पिलेबित तीनताल में दिए गए हैं।) उन सभी तालों में 16 मात्राएं होती है। टप्पे का प्रभाव ठुमरी गायकी पर भी देखने को मिलता है अतः शायद यही कारण है कि किन रागों मे ठुमरी गाई जाती है ज्यादातर टप्पे भी उन्हीं रागों ने गाए जाते हैं जैसे- भैरवी, खमान, काफी, झिंझोटी, गारा, तिलंग, पीलू, बरवा इत्यादि!

टप्पे की चाल कभी भी स्पाट एवं सीधी नहीं होती। इस गायन शैली में सपाट तानों का प्रयोग भी यदा कदा ही होता है। एवं किसी भी स्वर पर विश्राम का स्थान नहीं है। (15)

अन्य गायन विधाओं पर या गायन शैली का प्रभाव

टप्पा गायन शैली का प्रभाव ध्रुपद-धमार के अतिरिक्त प्राय: अन्य सभी विधाओं पर पड़ा। इस गायन शैली के आधार पर रचित ख्याल की बंदिशो को टप्पा ख्याल कहा जाता है। पटियाला घराना की कई बंदिशे टप्पा अंग की है। ठुमरी, दादरा में भी टप्पा अंग की हरकतों और तानों का प्रयोग होता है। ग्वालियर के कुछ मराठी पद, भजन आदि को टप्पा शैली के आधार पर बनाया गया। ख्याल, ठुमरी, के अतिरिक्त, तराना शैली पर भी

टप्पा का प्रभाव देखने को मिलता है, जिसे टप्पा तराना के नाम से भी जाना जाता है।

प्रसिद्ध संगीतकार व हारमोनियम वादक, श्री चैतन्य कुन्टे के अनुसार महाराष्ट्र में लावणी, कीर्तन और संगीत भी टप्पा गायकी से प्रभावित है। कुछ मराठी टप्पे भी सुनने को मिलते हैं। नियु बाबू के बंगाली टप्पे और रविन्द्र संगीत पर टप्पा का प्रभाव भी 20वीं सदी में शैली के रूप में टप्पा की लोकप्रियता को दर्शाता है।

इस प्रकार टप्पा गायन शैली के उपरोक्त विवरण द्वारा यह कहा जा सकता है कि टप्पा गायन की दो प्रमुख गायनशैलियां है - (i) ग्वालियर घराने का टप्पा (2) बनारस घराने का टप्पा ! अत: दोनो घरानों में ताल के उपयोग और तत्कालिक शैली जैसे कुछ संरचनात्मक अंतर है लेकिन मौलिक सिद्धांत दोनों में समान हैं। ग्वालियर और बनारस घराने के गायकों की ख्याल प्रस्तुती पर टप्पा गायकी का प्रभाव देखा जा सकता है। यहां तक की पटियाला गायकी की तान में भी टप्पा की कुछ झलक मिलती है। अन्य शैलियों पर टप्पा के प्रभाव के परिणामस्वरूप टप्प – ख्याल, टप-तराना, टप्प -ठुमरी आदि जैसी द्विस्वाभाविक रचनाओं का विकास हुआ।

टप्पा गायन शैली और वाद्य वादक

टप्पा गायन शैली का प्रभाव विभिन्न गायन शैलियों के अतिरिक्त वाद्य वादकों पर भी पड़ा और वादकों ने भी अपनी वादन शैली में टप्पा को

स्थान दिया ! उस्ताद मुश्ताक अली खां, के सितार वादन में टप्पा शैली का विशेष महत्व था। तन्त्र वादकों ने इस अंग की गतों की रचनाएं की, टप्पा अंग की गत कहा जाता है। टप्पा अंग के खटके, मुर्की, जमजमा, गिटकरी तथा विभिन्नू तानों आदि का प्रयोग भी वादक, अपनी वादन शैली में करते हैं! बनारस के सारंगी वादक, टप्पा वादन के लिए प्रसिद्ध हैं। पद्म भूषण अलंकृत, देवू चौधरी जी ने अपने गुरु उस्ताद मुश्ताक अली खां जी के विषय में कहा है कि “It May be Interesting to note that Khan sahib Played “ Kirtan and Tappa" Style in sitar in thirtees, When Many of our present masters were not born."

इस प्रकार वादकों ने टप्पा शैली को अपनाया और इसका प्रचलन किया। अत: वर्तमान काल में बुद्धादित्य मुखर्जी, द्वारा टप्पा अंग की गतें सुनने को मिलती हैं। बहुत कम वादक जैसे पौडत बुद्धादित्य मुखर्जी (सितार) डा0 अरविन्द (हारमोनियम) ने अपने वाघों पर बहुत सटीकता और महारत के साथ टप्पा बजाया है।

टप्पा गायन शैली के कलाकार

टप्पा गायन शैली के आविष्कारक कहे जाने वाले मियां शोरी ने अपने प्रमुख शिष्य गम्मू शिष्य को ध्रुपद ख्याल और टप्पा शैली की संपूर्ण शिक्षा दी। शोरी की गायकी का पूर्ण प्रभाव मक्खन खां और उसके पुत्र नत्थर पीरबख्श पर पड़ा, जिसके कारण ग्वालियर घराने में टप्पा गायकी का स्थायी रूप से प्रवेश हो गया। ग्वालियर घराने के तत्कालीन श्रेष्ठ गायक पं० शंकर पंडित ने प्रयत्नपूर्वक टप्पा गायकी को आत्मसात किया और अपने शिष्यों को सिखाया

ग्वालियर के स्कूल में कृष्ण राव पंडित और राजा भैया पूंछवाले महत्वपूर्ण टप्पा गायकों के रूप में उभरे। बाला साहब पूछवाले, तथा शरच्चंद्र अरोलकर, आदि इस परंपरा के पथ प्रदर्शक रहे। अरोलकर के शिष्यों जैसे-

शरद साठे, नीला भागवत, ने इस परंपरा को कायम रखने में अपनी अहम भूमिका निभाई।

मियां शोरी की शिष्य परंपरा में महाराष्ट्र के देवजी बुआ, श्री बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर, ग्वालियर के शंकर राव पंडित, एकनाथ पंडित ने टप्पा गायकी की शिक्षा प्राप्त की थी। शंकर राव, कृष्ण राव, बड़े रामदास, सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई, इत्यादि अतीत के टप्पा गायक रहे हैं तथा वर्तमान समय में श्रीमती शन्नो खुराना, सुमति मुटाटकर, गिरिजा देवी, सविता देवी, श्री एल के पंडित, व मालिनी राजुरकर, अजय चक्रवती इत्यादि टप्पा गापन शैली का प्रचार प्रसार कर रहे है।

अतः इन सभी कलाकारों में ग्वालियर घराने की श्रीमती मालिनी राजुरकर का नाम प्रमुख है क्योंकि 60 व 70 के दशक में जब टप्पा का प्रचलन संगीत समारोह मे नहीं होता था तब उन्होंने टप्पा को आम दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाया और ऐसा करके वे आने वाली पीढ़ीयों में टप्पा के लिए सामान्य जिज्ञासा जगाने का कारण बन गई।

इस प्रकार टप्पा गायन शैली उत्कृष्ट गायन शैली का दर्जा दिलाने वाली महान गायिका श्रीमती मालिनी राजुरकरजी दिनांक 6 सितंबर 2023 को इस दुनियासे अलविदा कह गई। परंतु भारतीय संगीत में उनके द्वारा दिये गए योगदान को संगीत प्रेमी हमेशा याद रखेंगे।

इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आज शास्त्रीयता के रंग में रंगी हुई क्लिष्ट एवं चमत्कारिक टप्पा गायन शैली, वस्तुत: अपने प्रारंभिक रूप में पंजाब प्रांत के लोकगीत के रूप में विख्यात

थी परन्तु टप्पे का उपशास्त्रीय रूप, मियां शोरी के अथक प्रयत्नों का परिणाम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा० मधुबाला सक्सेना—ख्याल शैली का विकास
2. डा0 सुरेश गोपाल श्रीखण्डे - शास्त्रीय गायन की शिक्षण प्रणाली
3. डा० सत्यवती शर्मा - ख्याल गायन शैली, विकसित आयाम
4. डा० भगवन्त कौर - परंपरागत हिन्दुस्तानी सैद्धान्तिक संगीत
5. डा० अरुण मिश्रा - भारतीय कंठ, संगीत और वाद्य संगीत
6. डा० लक्ष्मीनारायण गर्ग - संगीत विशारद
7. डा० उमेश जोशी - भारतीय संगीत का इतिहास
8. डा० रंजना सक्सेना- टप्पा गायन शैली का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन